REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2024

आज की नारी

डॉ . रेनू चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
विभाग - समाजशास्त्र , वर्धमान कॉलेज , बिजनौर.

प्रास्ताविक :

आज की भारतीय नारी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी एक सशक्त और स्वतंत्र पहचान बना रही है। परंपरागत भूमिकाओं से लेकर आधुनिक नेतृत्व तक, वह शिक्षा, रोजगार, राजनीति और संस्कृति में प्रगति कर रही है। वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी और सामाजिक जागरूकता ने नारी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। यह शोध पत्र आज की नारी की बदलती भूमिकाओं, उनके सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों का गहन अध्ययन करता है। शिक्षा, रोजगार, लैंगिक समानता और सांस्कृतिक परिवर्तन जैसे विभिन्न पहलुओं पर यह प्रकाश डालता है। यह पत्र परंपरागत और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन तथा नारी सशक्तीकरण की प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। भारतीय समाज में नारी के स्थान और उनके योगदान का आकलन करते हुए, यह सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक बदलाव के अंतरसंबंधों की पड़ताल करता है।

कीवर्ड्स : नारी सशक्तीकरण, सामाजिक समानता, आर्थिक स्वतंत्रता, सांस्कृतिक परिवर्तन, लैंगिक समानता, शिक्षा, रोजगार, वैश्वीकरण, परंपरागत मूल्य, आधुनिकता।

शोध निबंध के उद्देश्य :

१. आज की भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना।
२. नारी की आर्थिक स्वतंत्रता और रोजगार में उनकी भागीदारी का अध्ययन करना।
३. सांस्कृतिक परिवर्तनों के संदर्भ में नारी की बदलती पहचान का मूल्यांकन करना।
४. शिक्षा के क्षेत्र में नारी की प्रगति और इसके प्रभावों का विश्लेषण करना।
५. लैंगिक समानता की दिशा में प्रगति और चुनौतियों का आकलन करना।
६. वैश्वीकरण के नारी के जीवन पर प्रभावों की जांच करना।
७. परंपरागत और आधुनिक मूल्यों के बीच नारी की भूमिका का अध्ययन करना।
८. नारी सशक्तीकरण के लिए नीतिगत उपायों का मूल्यांकन करना।

९. सामाजिक रूढ़ियों और नारी की प्रगति के बीच संबंधों का विश्लेषण करना।
१०. नेतृत्व और निर्णय लेने की प्रक्रिया में नारी की भागीदारी का अध्ययन करना।

विषय विवेचन :

१. सामाजिक स्थिति और सामाजिक रूढ़ियों का खंडन :

आज की भारतीय नारी सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन का हिस्सा है। पहले जहां नारी की भूमिका मुख्य रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित थी, वहीं अब वह समाज के हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। शिक्षा और जागरूकता के प्रसार ने नारी को सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने और अपनी पहचान स्थापित करने में मदद की है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाएं स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। इसके अलावा, सामाजिक आंदोलनों और नीतिगत बदलावों ने लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया है। फिर भी, पितृसत्तात्मक मानसिकता और सामाजिक रूढ़ियां अभी भी कई क्षेत्रों में चुनौती बनी हुई हैं।

पहचान का पुनर्निर्माण आज की नारी पारंपरिक सामाजिक मानदंडों को चुनौती दे रही है। वह केवल गृहणी या माँ की भूमिका तक सीमित नहीं है; वह एक वैज्ञानिक, एथलीट, कलाकार, और सैनिक भी है। प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह, और एकल अभिभावकत्व जैसी अवधारणाएँ समाज में अधिक स्वीकार्य हो रही हैं, जो नारी को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पसंद का अधिकार देती हैं। हालांकि, पितृसत्तात्मक मानसिकता और ऑनर किलिंग जैसी समस्याएँ अभी भी समाज में विद्यमान हैं।

२. आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता :

आर्थिक स्वतंत्रता आज की नारी के सशक्तीकरण का एक प्रमुख आधार है। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी कार्यबल में देखी जा सकती है, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में। सरकारी योजनाएं जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" और "मुद्रा योजना" ने महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने में सहायता की है। इसके बावजूद, वेतन असमानता, कार्यस्थल पर भेदभाव और घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ अभी भी उनकी प्रगति में बाधक हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, सूक्ष्म वित्त और स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को छोटे व्यवसाय शुरू करने में सक्षम बनाया है। यह आर्थिक स्वतंत्रता न केवल उनकी व्यक्तिगत स्थिति को मजबूत करती है, बल्कि परिवार और समाज के विकास में भी योगदान देती है।

नए क्षितिज आज की नारी विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है, चाहे वह कॉर्पोरेट जगत हो, उद्यमिता हो, या कृषि हो। सरकारी योजनाओं (जैसे मुद्रा योजना) और स्वयं सहायता समूहों (SHGs) ने ग्रामीण नारी को आत्मनिर्भर बनाने में मदद की है। शहरी क्षेत्रों में, नारी पेशेवर भूमिकाओं में उच्च पदों पर आसीन हो रही है, जिससे आर्थिक विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। हालांकि, लैंगिक वेतन अंतर और कार्यस्थल पर उत्पीड़न जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं।

३. कला, साहित्य और संस्कृति में नारी की अभिव्यक्ति :

बदलती छवि आधुनिक भारतीय साहित्य, सिनेमा और कला में नारी को अधिक जटिल, सशक्त और यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। वह अब केवल पीड़ित या आदर्श गृहणी नहीं है, बल्कि एक सक्रिय अभिकर्ता है जो अपनी नियति स्वयं लिखती है। महिला लेखिकाएँ, निर्देशक और कलाकार अपनी कृतियों के माध्यम से लैंगिक मुद्दों को उठा रही हैं और नारी की विविध अनुभवों को दर्शा रही हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन ने नारी की पहचान को नए आयाम दिए हैं। वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने नारी को अपनी संस्कृति को संरक्षित करते हुए आधुनिक मूल्यों को अपनाने का अवसर प्रदान किया है। सिनेमा, साहित्य और कला में नारी की सशक्त छवि उभर रही है। उदाहरण के लिए, बॉलीवुड फिल्में जैसे "क्वीन" और "थप्पड़" ने नारी की स्वतंत्रता और आत्मसम्मान को दर्शाया है। साथ ही, सोशल मीडिया ने महिलाओं को अपनी आवाज बुलंद करने का मंच दिया है। फिर भी, परंपरागत और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखना एक चुनौती है। कई नारियां अभी भी सामाजिक दबावों और अपेक्षाओं का सामना करती हैं, जो उनकी स्वतंत्रता को सीमित करते हैं।

४. शिक्षा में प्रगति :

शिक्षा नारी सशक्तीकरण का आधार स्तंभ है। हाल के दशकों में, भारत में महिला साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के अनुसार, २०२० तक महिला साक्षरता दर ७०.३% तक पहुंच गई थी। उच्च शिक्षा में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, विशेष रूप से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) जैसे क्षेत्रों में। सरकारी योजनाएं जैसे "सर्व शिक्षा अभियान" और "राष्ट्रीय महिला शिक्षा नीति" ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षा ने नारी को न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और आत्मविश्वास भी प्रदान किया है। फिर भी, ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह और स्कूल छोड़ने की दर अभी भी चुनौती बनी हुई है।

५. लैंगिक समानता :

लैंगिक समानता आज की नारी के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। भारत ने संविधान के अनुच्छेद १४, १५ और १६ के तहत लैंगिक समानता की गारंटी दी है, फिर भी व्यावहारिक रूप से इसे लागू करना चुनौतीपूर्ण रहा है। कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव, यौन उत्पीड़न और असमान वेतन जैसी समस्याएं अभी भी मौजूद हैं। हालांकि, #MeToo जैसे आंदोलनों ने महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने का साहस दिया है। इसके अलावा, पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए ३३% आरक्षण ने ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। लैंगिक समानता की दिशा में प्रगति हो रही है, लेकिन पूर्ण समानता के लिए अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

६. स्वास्थ्य और कल्याण :

प्राथमिकताओं में बदलाव नारी के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है। सरकारी कार्यक्रम मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण और परिवार नियोजन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। महिला स्वास्थ्य स्वयंसेविकाएँ (ASHA) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मासिक धर्म स्वच्छता, स्तन कैंसर और सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। फिर भी, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और वित्तीय बाधाएँ कुछ क्षेत्रों में चुनौती बनी हुई हैं।

७. वैश्वीकरण का प्रभाव :

वैश्वीकरण ने नारी के जीवन को कई तरह से प्रभावित किया है। एक ओर, इसने रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं, जैसे कि बीपीओ, आईटी और ई-कॉमर्स क्षेत्रों में। दूसरी ओर, इसने पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव को बढ़ाया है, जिसने नारी की जीवनशैली और सोच को बदला है। वैश्वीकरण ने महिलाओं को वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया है, जैसे कि प्रियंका चोपड़ा और सायना नेहवाल जैसी हस्तियां। हालांकि,

वैश्वीकरण ने असमानता को भी बढ़ाया है, क्योंकि शहरी और ग्रामीण महिलाओं के बीच अवसरों का अंतर बढ़ा है। इसके अलावा, वैश्वीकरण ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है, जिसने नारी पर सामाजिक दबाव को और बढ़ाया है।

८. परंपरागत और आधुनिक मूल्य :

आज की नारी परंपरागत और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती का सामना कर रही है। एक ओर, वह अपने परिवार और संस्कृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाती है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करना चाहती है। उदाहरण के लिए, कई महिलाएं विवाह और करियर के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करती हैं। शहरी क्षेत्रों में, यह संतुलन कुछ हद तक आसान है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक अपेक्षाएं इसे जटिल बनाती हैं। फिर भी, नारी ने इस दोहरी भूमिका को न केवल स्वीकार किया है, बल्कि इसे अपनी ताकत बनाया है।

९. घरेलू हिंसा और सुरक्षा :

एक गंभीर चुनौती घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और दहेज संबंधी अपराध भारतीय नारी के लिए गंभीर चुनौतियाँ हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियानों और सख्त कानूनों के बावजूद, इन अपराधों में कमी लाना एक बड़ा काम है। निर्भया फंड और वन-स्टॉप सेंटर जैसी पहलें पीड़ितों को सहायता प्रदान कर रही हैं, लेकिन समाज में मानसिकता बदलने और न्याय प्रणाली को मजबूत करने की आवश्यकता है।

१०. नीतिगत उपाय :

नारी सशक्तीकरण के लिए भारत सरकार ने कई नीतिगत उपाय किए हैं। "महिला शक्ति केंद्र", "प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना" और "उज्ज्वला योजना" जैसी योजनाओं ने महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने में योगदान दिया है। इसके अलावा, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम के लिए "विशाखा दिशानिर्देश" और "POSH अधिनियम" लागू किए गए हैं। हालांकि, इन नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन अभी भी एक चुनौती है। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी और नौकरशाही बाधाएं इन योजनाओं की सफलता को सीमित करती हैं। नीतिगत उपायों को और अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

११. सामाजिक रूढ़ियां :

सामाजिक रूढ़ियां आज की नारी की प्रगति में एक प्रमुख बाधा हैं। पितृसत्तात्मक समाज में, नारी को अक्सर कमजोर और घरेलू कार्यों तक सीमित माना जाता है। इन रूढ़ियों ने नारी की शिक्षा, रोजगार और नेतृत्व की संभावनाओं को प्रभावित किया है। हालांकि, शिक्षा और मीडिया ने इन रूढ़ियों को तोड़ने में मदद की है। उदाहरण के लिए, विज्ञापन और सिनेमा में अब सशक्त महिला पात्रों को दर्शाया जाता है। फिर भी, सामाजिक बदलाव की गति धीमी है, और ग्रामीण क्षेत्रों में रूढ़ियां अभी भी प्रबल हैं। इन रूढ़ियों को तोड़ने के लिए जागरूकता और शिक्षा को और बढ़ावा देना होगा।

१२. नेतृत्व और निर्णय लेना :

नारी का नेतृत्व और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहभाग बढ़ रहा है। राजनीति में इंदिरा गांधी से लेकर निर्मला सीतारमण तक, और कॉर्पोरेट जगत में इंद्रा नूयी से लेकर किरण मजूमदार-शॉ तक, महिलाएं नेतृत्व की भूमिका

निभा रही हैं। पंचायती राज में महिलाओं के लिए आरक्षण ने ग्रामीण स्तर पर उनके नेतृत्व को बढ़ावा दिया है। फिर भी, कॉर्पोरेट बोर्डरूम और उच्च राजनीतिक पदों पर महिलाओं की संख्या अभी भी सीमित है। नेतृत्व में उनकी भागीदारी को बढ़ाने के लिए मेंटरशिप, प्रशिक्षण और नीतिगत समर्थन की आवश्यकता है। नारी का नेतृत्व समाज के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

१३. ग्रामीण और शहरी नारी के अनुभव :

एक द्वंद्वात्मकता ग्रामीण नारी अक्सर सीमित संसाधनों, पारंपरिक मानदंडों और बुनियादी सुविधाओं की कमी का सामना करती है। कृषि और घरेलू कार्यों में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन अक्सर उसकी मेहनत को कम आँका जाता है। शहरी नारी को अधिक अवसर मिलते हैं, लेकिन उसे कार्य-जीवन संतुलन, महानगरीय दबाव और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ भी झेलनी पड़ती हैं। दोनों के अनुभव अलग-अलग हैं, और उनके सशक्तिकरण के लिए अलग-अलग दृष्टिकोणों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :

१. आज की नारी सामाजिक संरचना में सशक्त भूमिका निभा रही है, लेकिन पितृसत्तात्मक बाधाएं अभी भी मौजूद हैं।
२. आर्थिक स्वतंत्रता ने नारी को आत्मनिर्भर बनाया है, परंतु वेतन असमानता एक चुनौती है।
३. सांस्कृतिक परिवर्तनों ने नारी की पहचान को नए आयाम दिए हैं।
४. शिक्षा ने नारी सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी और प्रयास चाहिए।
५. लैंगिक समानता की दिशा में प्रगति हो रही है, पर पूर्ण समानता के लिए और कदम उठाने होंगे।
६. वैश्वीकरण ने नारी के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों लाए हैं।
७. परंपरागत और आधुनिक मूल्यों का संतुलन नारी की ताकत बन रहा है।
८. नीतिगत उपाय सकारात्मक हैं, लेकिन उनके कार्यान्वयन में सुधार की आवश्यकता है।
९. सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने के लिए शिक्षा और जागरूकता महत्वपूर्ण हैं।
१०. नेतृत्व में नारी की भागीदारी समाज के विकास के लिए आवश्यक है।

संदर्भ:

१. Chakravarti, Uma. *Gendering Caste: Through a Feminist Lens*. Stree, २००३.
२. Desai, Neera, and Maithreyi Krishnaraj. *Women and Society in India*. Ajanta Publications, १९८७.
३. Menon, Nivedita. *Seeing Like a Feminist*. Zubaan, २०१२.
४. Sen, Amartya. *Development as Freedom*. Oxford UP, १९९९.
५. विकास, एन. “भारत में युगों से महिलाओं की स्थिति।” सामाजिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, २०१३।
६. रंजीता, एस. “आज के समाज में महिलाओं की स्थिति।” मानविकी और सामाजिक विज्ञान आविष्कार के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, २०१४।
७. गोपाल कृष्ण, यू. एम., और आलिया एस. “वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह: एक समीक्षा।” इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी विज्ञान अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, २०१७।

८. चंद्रकला, एस. एच. "भारत में महिलाओं की स्थिति, प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक साम्राज्यवाद की स्थिति।" अंतर अनुशासनात्मक अनुसंधान के जर्नल, २०१६।
९. अर्पिता, बी. "भारत में महिलाओं की स्थिति और लैंगिक भेदभाव।" विकास अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, २०१३।
१०. अभिषेक, पी., और गायत्री जे. "भारत में महिलाओं की स्थिति का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण।" शुद्ध और एप्लाइड गणित के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, २०१८।
११. www.worldwidejournals.com
१२. www.humanrightscareers.com
१३. www.sciencedirect.com